REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

जनजातीय समाज के विकास में रेडियो की भूमिका

अमिता
सहायक प्राध्यापक , पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

परिचय :

संचार से ही सामाजिक संबंधों की स्थापना हुई और समाज का निर्माण हो सका। इस वजह से ही संचार को मानव जीवन की नैसर्गिक आवश्यकता माना जाता है। वर्तमान युग के संचार साधनों में समाज के विकास में रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। **सामुदायिक रेडियो**, जो कि रेडियो का एक प्रकार है, ने भारत के ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सामुदायिक रेडियो ने आम आदमी या जनजातीय समाज को अभिव्यक्ति का एक बेहतर मंच उपलब्ध कराया है। इस प्लेटफार्म के माध्यम से समाज का सबसे कमजोर तबका भी अपनी बात, अपना संदेश समाज के अन्य वर्ग समूहों एवं सरकार तक पहुंचाने में सक्षम हो सका है। हालांकि यह भी आक्षेप लगाया जाता है कि भारत में सामुदायिक रेडियो संगठन, जनसरोकारों, को बहुत महत्व नहीं देते परंतु यह भी सत्य है कि यहां सामुदायिक रेडियो अपने शैशव–काल में है। ये संगठन जन आकांक्षाओं पर पूरी तरह से खरे नहीं उतर रहे है, फिर भी ग्राम्य विकास एवं जनजातीय समाज की आवाज बुलंद करने में इनकी भूमिका को कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। जैसा कि डॉ. कंचन के. मलिक की राय है कि स्वतंत्र रूप से बोलने और अभिव्यक्ति की आजादी संपूर्ण विश्व में सामुदायिक रेडियो की पहचान है और भारत में भी वे इस ओर तेजी के साथ अग्रसर हो रहे है।

सामुदायिक रेडियो को प्रसारण का तीसरा मॉडल माना जाता है, जो सरकारी एवं व्यापारिक प्रसारण माध्यमों से ज्यादा जनजातीय समाज के करीब होता है। देश में कुछ प्रमुख सामुदायिक रेडियो संगठन अपने स्थानीय क्षेत्र के अनाम लोगों को एक नई पहचान देने का कार्य रहे है, साथ ही स्थानीय संस्कृति, लोकाचार, संस्कार, कला एवं लोकगीत के प्रोत्साहन और संवर्धन के लिए प्रयासरत है।

इनके माध्यम से विलुप्त हो रही कला, संस्कृति, परंपरा एवं लोकगीतों का संरक्षण हो रहा है। 15 से 20 किमी के दायरे में ही प्रसारण को बाध्य ये माध्यम मुख्यधारा की मीडिया के फोकस एरिया से परित्यक्त जनजातीय समाज को मुखर बनाने का कार्य कर रहे है। इस कड़ी में संघम रेडियो, कुंजल पंछी, नम्म ध्वनि, रेडियो बुंदेलखंड, रेडियो नमस्कार, गुड़गांव की आवाज, ललित लोकवाणी, रेडियो धड़कन, चंदेरी की आवाज, रेडियो नजरिया आदि प्रमुख नाम है। मीडिया संगठन **चरखा** के 2005 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार मुख्यधारा की मीडिया में जनसरोकारों या जनजातीय समाज से जुड़े मसलों को मात्र 2 फीसदी जगह ही मिल पाती है। ऐसे में जनजातीय समाज के लिए सामुदायिक रेडियो एक वरदान साबित हुआ है। मुख्यधारा की मीडिया ने वैसे कई मुद्दों को बाद में महत्व दिया जिन्हें कम्यूनिटी रेडियो के माध्यम से पहले ही उठाया जा चुका था।

कम्यूनिटी रेडियो के बारे में कहा जाता है कि यह आम आदमी का, आम आदमी के लिए, आम आदमी के द्वारा चलाया जा रहा रेडियो है, जो आम आदमी को अपनी बात रखने क लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करता

है। कम्यूनिटी रेडियो प्रसारणकर्ताओं के विश्व संगठन ने इसके दर्शन पर चर्चा करते हुए कहा कि सामुदायिक रेडियो का मूल दर्शन वैसे लोगों की आवाज बनना है जिनकी आवाज को कोई भी नहीं सुनता है। इसको विकास के एक उपकरण की भूमिका निभानी है, साथ ही जनजातीय समाज की आवाज को भी बुलंद करना है।

भारत में सामुदायिक रेडियो की विकास यात्रा में 1995 में माननीय उच्चतम न्यायालय के एक फैसले ने मील के पत्थर का काम किया, जब न्यायालय ने वायु तरंगो को सार्वजनिक संपत्ति करार दिया। सन् 2002 में सरकार ने अपनी सामुदायिक रेडियो नीति की घोषणा की। वर्ष 2011 में मध्यप्रदेश सरकार ने राज्य के सभी जनजाति बहुल ब्लॉक में 110 कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन शुरु करने की घोषणा की थी। जिसमें भील, सेहरिया, बैंगा, कोरकू, भरिया, गोंड बहुल इलाकों को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया। राज्य के शिवपुरी में रेडियो धड़कन और अशोकनगर में चंदेरी की आवाज सामुदायिक विकास में महती भूमिका निभा रहे है।

मध्यप्रदेश में सामुदायिक रेडियो ने समाज के जनजातीय समाज की आवाज को बुलंद करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोध–पत्र में इस तथ्य की पड़ताल करने की कोशिश की गई है कि सामुदायिक रेडियो ने आम जनता को कितना महत्व दिया है और उसनेजनजातीय समाज की समस्याआ को प्रकाशित करने में क्या रोल अदा किया है? सामुदायिक रेडियो किस सीमा तक आम लोगों की आवाज बनी है साथ ही रेडियो ने उनकी आवाज को मजबूत बनाने में किस प्रकार से योगदान दिया है?

अध्ययन का उद्देश्य :

- ✓ जनजातीय समाज की आवाज को बुलंद करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का पता लगाना।
- ✓ स्थानीय जनता की समस्याओं को प्रकाशित करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का अध्ययन करना।
- ✓ कम्यूनिटी रेडियो कार्यक्रमों में जनजातीय समाज की रूचि का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि :

निदर्शन का प्रकार एवं विधि : शोध समस्या को ध्यान में रखते हुए यह अनिवार्य था कि सैंपल इस प्रकार का हो जिसे समस्या की अच्छी समझ हो। अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि एवं सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से इकाई का चुनाव किया गया है। जब शोध समस्या की प्रकृति वैशेषिक होती है तब निदर्शन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह शोध समस्या विशेष प्रकार की है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से वैसे स्थानों का चयन किया गया जहां रेडियो की पहुंच थी एवं उत्तरदाता आसानी से बिना किसी रूकावट के चंदेरी की आवाज को सुनते थे। इस प्रकार से अध्ययन हेतु चंदेरी ब्लॉक के रामनगर एवं चंदेरी कस्बे को चुना गया क्योंकि यह रेडियो के पहुंच क्षेत्र में भी था और यहां पर सिग्नल भी बहुत अच्छा आता था। दूसरे स्तर में हमने सुविधाजनक निदर्शन का प्रयोग किया क्योंकि एक तो गांव पर सभी लोग बात करने को तैयार नहीं होते है और दूसरे सभी श्रोता हो यह भी संभव नहीं था। अतः हमने वैस लोगों को ही अध्ययन में शामिल किया जो श्रोता भी थे और बात करने के लिए तैयार भी थे।

अनुसंधान उपकरण : अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया है। क्योंकि उत्तरदाताओं में कई लोग निरक्षर थे और गांवों में सामान्यतया यह देखा जाता है कि साक्षर उत्तरदाता भी स्वयं प्रश्न का लिखित उत्तर देने से कतराते है। ऐसे में अनुसूची का ही प्रयोग करना तर्कसंगत होता है। अध्ययन में कई प्रश्न ऐसे भी होत है जिनका उत्तर देना कई बार उत्तरदाता के लिए मुश्किल होता है या फिर वह उत्तर देना ही नहीं चाहता, ऐसे में शोधकर्ता की उपस्थिति काफी मायने रखती है। शोधकर्ता वैसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए भी उत्तरदाता को प्रेरित करता है जिनका सामान्य परिस्थितियों में काई भी व्यक्ति उत्तर नहीं देना चाहता।

सर्वेक्षण के माध्यम से सामुदायिक रेडियो के पहुंच क्षेत्र के उत्तरदाताओं से तथ्य संकलन कर रेडियो की भूमिका का अध्ययन किया गया, साथ ही 2 दिनो तक इस क्षेत्र में अर्द्ध–सहभागी अवलोकन विधि के माध्यम से भी रेडियो की **जनजातीय समाज की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बुलंद करने में भूमिका** का अध्ययन किया गया।

तथ्यों की विवेचना :

सैंपल सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अध्ययन में शामिल इकाइयों में से 60 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन रेडियो सुनने वाले है जबकि 40 प्रतिशत कभी–कभी रेडियो सुना करते है। इनमें शत–प्रतिशत उत्तरदाता सामुदायिक रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों के श्रोता है। श्रोताओं के पसंदीदा कार्यक्रमों में लोकगीत, स्थानीय मुद्दों पर कार्यक्रम, कृषि की जानकारी आदि है। वे लोग रेडिया कार्यक्रमों को तीन कारणो से सुनते है– पहला, कार्यक्रम में स्थानीय समस्याओं को फोकस किया जाता है। दूसरा, अपने आस–पास की बातें सुनने में अच्छा लगता है और तीसरा, कई बार अपने जाने–पहचाने लोग ही कार्यक्रम में शामिल होते है।

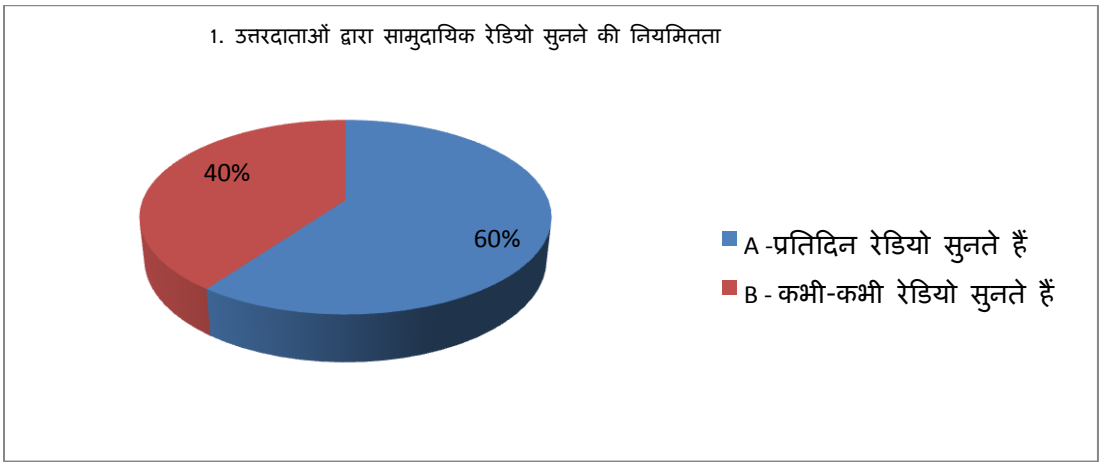

50 फीसदी उत्तरदाताओं ने रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों में शामिल होने की बात बताई, वही लगभग आधे श्रोताओं ने कभी किसी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया है।

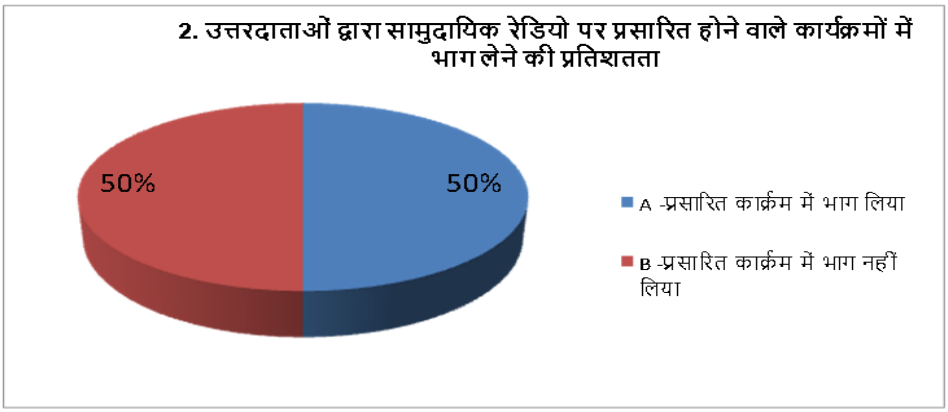

70 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना हे कि रेडियो पर स्थानीय मुद्दों को फोकस किया जाता है जबकि 30 प्रतिशत ने इस पर अपनी कोई राय नहीं व्यक्त की। 20 फीसदी उत्तरदाताओं को रेडियो पर किसी न किसो रूप में कार्यक्रम प्रस्तुत करने का मौका मिला है जबकि 80 प्रतिशत ने कभी कोई कार्यक्रम प्रस्तुत नहीं किया है। 30 प्रतिशत श्रोताओं के परिचय के अन्य लोगों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं, वहीं 70 फीसदी उत्तरदाताओं के नहीं।

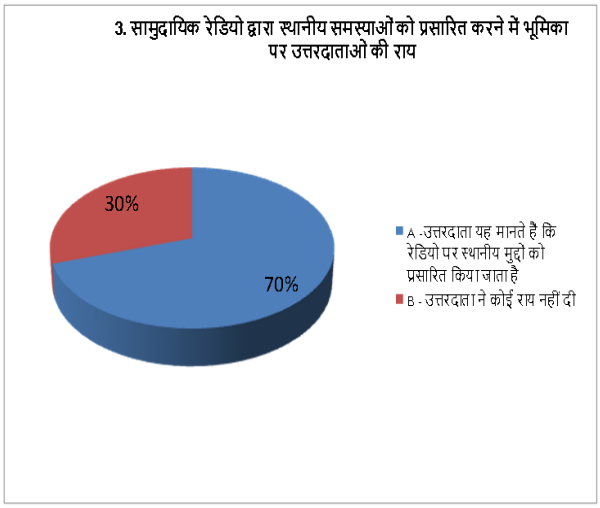

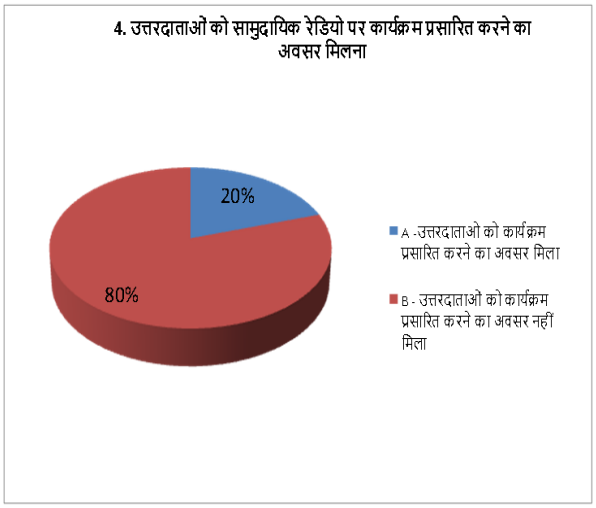

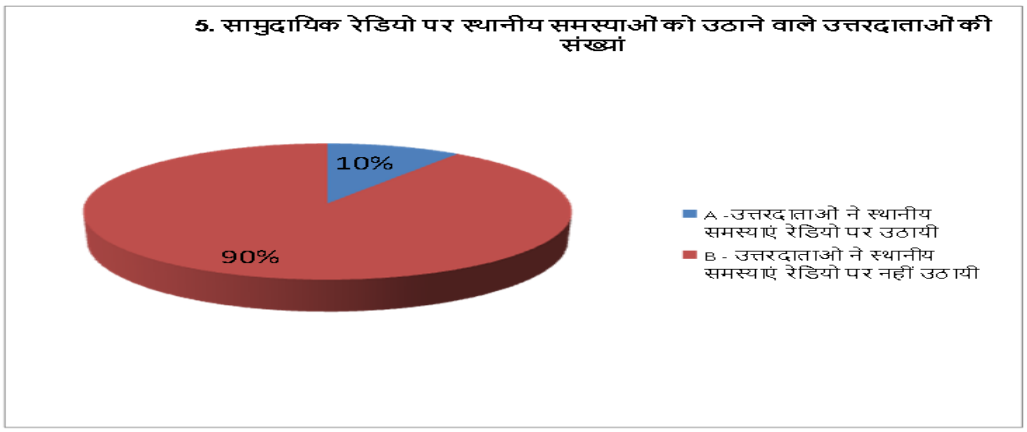

मात्र 10 फीसदी उत्तरदाताओं ने किसी स्थानीय समस्या पर अपनी बात रेडियो के माध्यम से उठाई है जबकि 90 प्रतिशत लोगों ने कभी अपनी बात रेडियो के माध्यम से नहीं उठाई है। जन–प्रतिनिधियों एवं जन–सेवको से सम्बन्धित कभी कोई समस्या रेडियो के माध्यम से श्रोताओं द्वारा नहीं उठाई गई है। मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रेडियो की मदद से स्थानीय समस्याओं पर अपनी आवाज बुलंद की है जबकि 90 फीसदी उत्तरदाताओं ने कभी ऐसा नहीं किया है।

अर्द्ध–सहभागी अवलोकन के अनुभव :

क्योंकि दो दिनों तक हम उस क्षेत्र में रहे अतः कुछ उत्तरदाताओं से अनौपचारिक बात–चीत में भी कई तथ्य उभर कर सपामे आए। सबसे पहले लोगों में शिक्षा एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक का अभाव देखा गया तो दूसरे वहां के लोग एवं स्थानीय अधिकारियों के बीच एक प्रकार का कम्यूनिकेशन गैप देखने को मिला। विभिन्न योजनाओं के प्रति उत्तरदाताओं की अनभिज्ञता चौंकाने वाली थी। यूं लग रहा था मानों हम किसी अलग प्रकार के भारत में चले आए हो। वहां के बुनकर अब भी चंदेरी के साहूकारो एवं बड़े व्यापारियों के दास की तरह थे और अपनी जीविका के लिए पूर्ण रूप से उनकी दया पर निर्भर थे। हालांकि रेडियो ने स्थानीय समस्याओं को फोकस किया परंतु वास्तविक समस्याओं के निदान पर कभी कोई कार्य नहीं किया, न ही जनजातीय समाज में अधिकार चेतना फैलाने या उनकी आवाज को बुलंद करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फिर भी 2 वर्षों में रेडियो की भूमिका पर ज्यादा आक्षेप करना उचित नहीं होगा। रेडियो संगठन ने अपने प्रचार–प्रसार के प्रति भी उदासीनता ही दिखाई है क्योंकि उसी क्षेत्र के कई लोगों को यह मालूम नहीं कि उनके यहां से भी कोई रेडियो प्रसारण होता है।

निष्कर्ष :

सर्वेक्षण से प्राप्त आकड़ों एवं अर्द्ध–सहभागी अवलोकन से प्राप्त अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि रेडियो अपने स्थापना के वास्तविक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सका है। परंतु क्षेत्र में बिजली की उपलब्धता एवं अगर कार्यकाल के वर्षों के आधार पर रेडियो की उपलब्धि को औसत माना जा सकता है। क्योंकि रेडियो ने मात्र दो वर्षों में लोगों में स्वास्थ्य, आधुनिक कृषि एवं स्थानीय समस्याओं के प्रति बहुत हद तक जागरूकता फलाने का कार्य किया है। फिर भी स्थानीय लोगों को अपने प्रसारण से ज्यादा से ज्यादा जोड़ने के प्रति संगठन के कर्ता–धर्ता बहुत ही उदासीन मालूम होते है।

जहां तक समाज के आम आदमी का प्रश्न है रेडियो ने उनकी समस्याओं को तो उठाया, उनके बीच जागरूकता का भी प्रसार किया परंतु उनकी आवाज को बुलंद करने के लिए और उनमें अधिकार चेतना के प्रसार के लिए कारगर प्रसार नहीं किए। ज्यादातर लोग सूचना, स्थानीय के प्रति रूझान एवं मनोरंजन के कारण से रेडियो को सुनते है। जबकि विश्व में कई सामुदायिक रेडियो जनजातीय समाज की आवाज बनकर उभरे हैं उन्होंने जनजातीय समाज के साथ होने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार, उसकी आवाज को प्रशासन द्वारा नहीं सुनने के खिलाफ व्यवस्था के साथ खुली जंग छेड़ रखी है। भारत में भी मंदाकिनी की आवाज प्रशासन एवं जनजातीय समाजके बीच एक सेतु कार्य कर रही है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो संगठनों को अपने स्थापना के मौलिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना होगा और जनजातीय समाज की आवाज को, उनकी अभिव्यक्ति को मुखर बनाना होगा।

सुझाव :

- ✓ रेडियो को स्वयं के प्रचार–प्रसार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- ✓ ज्यादा से ज्यादा जनजातीय समाज को अपने कार्यक्रमों से जोड़ने की जरूरत है।
- ✓ समाज की वास्तविक समस्याओं एवं बुनकरों के व्यापक स्तर पर हो रहे शोषण को हाईलाइट करना चाहिए।
- ✓ समाज के वंचित एवं पिछड़े तबको की आवाज को बुलंद करना चाहिए।

संदर्भ :

हास, टैनी : द स्टेट ऑफ पब्लिक जर्नलिस्म टुडे, जर्नल ऑफ ग्लोबल कम्यूनिकेशन, वल्यूम नं. 1–जनवरी, जून 2011।

Jacob, k.s "A human right checklist for india" Article, The Hindu-20 may 2009.

http://www.ummid.com/news/2011/July/30.07.2011/community_radio_planned_in_mp.htm

http://en.wikipedia.org/wiki/Community_radio

www.thehoot.org

Sakshi Abrol

http://www.youthkiawaaz.com/2011/02/community-radio-for-rural-development/

अमिता

सहायक प्राध्यापक , पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग , काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.